International Journal of Fundamental & Applied Research
Website : www.ijfar.org ,(ISSN- 2320-7973 Volume-5 Issue -10+11 Month – January+February 2018 pp. (04 – 06)

मानव संसाधन के समाजिक अभिलक्षण भोपाल होशंगाबाद संभाग के संदर्भ में

अफरोज़ जहां

सार संक्षेप

आज के प्रगतिशील युग में किसी भी अर्थव्यवास्था को सुचारू रूप से पल्लवित होने के लिए मानव संसाधन एक आधारभूत विकासजन्य अक्षयनिधि है। जो परिणात्मक लक्षण को महत्व न देकर गुणात्मक प्रवृत्तियों से युक्त होती है। मानव विकास की प्रक्रिया को सार्थक रूप से पूर्ण करने के लिए उसके सामाजिक अभिलक्षणों को अनदेखा नहीं कर सकते। मानव विकास के इन प्रयासों में मानव का व्यक्तिगत प्रशिक्षण मानव में सामाजिक एवं सामूहिक भाव के कार्य करने की क्षमता का सृजन ऐसे कार्य है जिसके द्वारा किसी भी संगठन, प्रदेश अथवा राष्ट्र में उपलब्ध मानव संसाधन का पूर्ण रूप से विकास किया जा सकता है।

परिचय :–

मानव संसाधन की परिधि में जनसंख्या के सामाजिक स्वरूप का अति महत्वपूर्ण स्थान होता है क्योंकि मनुष्य केवल आर्थिक क्रियाओं को संचालित करने वाला मशीनी पुर्जा मात्र ही नहीं होता बल्कि वह समाज की एक ऐसी क्रियाशील इकाई होता है जो सामाजिक संगठन में बंधकर जीवन यापन और क्रिया–कलाप के लिए शक्ति भी अर्जित करता है। अतः मानव संसाधन के विकास के प्रक्रम में मानव संसाधन के सामाजिक अभिलक्षणों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना भी अनिवार्य हो जाता है। इन अभिलक्षणों में जनसंख्या के विभिन्न सामाजिक अभिलक्षण जैसे– आयु संरचना, लिंगानुपात, ग्रामीण व नगरीय जनसंख्या, जाति संरचना, धर्म, साक्षरता, वैवाहिक स्तर तथा सामाजिक रीतिरिवाज इत्यादि के आधार पर जनसंख्या – वितरण के प्रतिरूपों का अभिज्ञान आदि।

पद्यतिशास्त्र :–

मानव संसाधन के सामाजिक एवं आर्थिक अभिलक्षणों सम्बंधी विभिन्न निर्धारक तथ्यों से संबंधित आंकड़ों के संकलन के लिए स्तरीकृत न्यादर्श (स्ट्रेफी फाइड रेंडम सेम्पलिंग) विधि का प्रयोग किया गया है।

उद्देश्य :–

इसके निम्नलिखित उद्देश्य है :–

1. मानव विकास के सैद्वांतिक पक्ष की सम्यक व्याख्या करना।
2. अध्ययन क्षेत्र के उपलब्ध मानवीय संसाधन की पहचान एवं उनके स्थानिक और क्षेत्रीय वितरण को निश्चित करना।
3. मानव संसाधन के विकास हेतु उपलब्ध आधारभूत सामाजिक सुविधाओं का विश्लेषणात्मक विवेचन करना।

इतिवृत्तामक संदर्भ :–

पारीक तथा राव (1981) महोदय द्वारा मानव संसाधन प्रणाली के सैद्धांतिक पक्ष को विकसित करने का प्रयास किया गया है। इसी समय मानव संसाधन विकास के संदर्भ में तीसरी दुनिया के देशों की गरीबी का भी उल्लेख किया गया है। इतना ही नहीं भारतीय उद्योगों के संदर्भ में मानव संसाधन विकास की प्रचलित पद्धतियो का भी उल्लेख किया गया है। भारतीय संदर्भ और सामाजिक संदर्भ में मानव स्वरूप का व्याख्यादित किया गया है। मानव संसाधन के विकास के लिए प्रशिक्षण की भूमिका को महत्व दिया गया है। साथ ही मानव संसाधन के लिए सैद्धांतिक नियमन का भी निर्धारण किया गया है। मानव संसाधन के सामाजिक अभिलक्षण और विकास पर समय–समय पर विभिन्न शोध कार्य होते रहे है। जैसे भारत की सातवीं पंचवर्षीय योजना में मानव संसाधन विकास के नियोजन प्रक्रम की समस्या के सदंर्भ में कोहली और गौतम (1988) द्वारा एक विशद् विश्लेषणात्मक एवं व्यवहारिक व्याख्या प्रस्तुत है जो एक नवीनतम योगदान है।

मानव संसाधन मूल्यांकन के संदर्भ में एक प्रमुख लक्षण सामाजिकरण की प्रवृत्ति के रूप में माना जा सकता है। जो सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास की व्याख्या करता है। इस लक्षण से संबंधित हर्ट्ज तथा बूले (1982) का कार्य इस संदर्भ में उपयुक्त उदाहरण माना जा सकता है।

अध्ययन क्षेत्र में आने वाली सामाजिक समस्याऐं :–

1. क्षेत्र की कुल जनसंख्या में 5 वर्ष से कम आयु के अन्तर्गत 7.5 प्रतिशत जनसंख्या सम्मिलित है। 5 से 14 वर्ष की आयु का प्रतिशत 22.5 है, और 60 वर्ष से ऊपर आयु वाली जनसंख्या का प्रतिशत भोपाल एवं होशंगाबाद दोनों संभाग में 6.4 है। यह सभी जनसंख्या आश्रित जनसंख्या की श्रेणी में आती है।
2. अध्ययन क्षेत्र में 1991 में प्रति हजार पुरूषों पर स्त्रीयों का अनुपात 905 था। वहीं 2001 में यह 909 हो गया। इसमें अधिक अंतर नहीं आया जो कि चिंता का विषय है। क्योंकि लिंगानुपात में इस विभिन्नता का मुख्य कारण स्त्रियों की मृत्युदर की अधिकता या भ्रूण परीक्षणों के द्वारा गर्भपात करवाना प्रतीत होता है। यह दशाऐं यहां के समाज में घातक रूप से व्याप्त है।
3. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रो में जनसंख्या का एक समान वितरण नहीं है जबकि ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में एक समान वितरण एक संतुलित अर्थव्यवस्था के लिए आवश्यक होता है।

Corresponding Author : email :

International Journal of Fundamental & Applied Research
Website : www.ijfar.org ,(ISSN- 2320-7973 Volume-5 Issue -10+11 Month – January+February 2018 pp. (04 – 06)

4. वर्ष 1991 में 30.72 प्रतिशत जनसंख्या शहरों में निवास करती थी। जो 2001 में 32.7 हो गई। इसका मुख्य कारण ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार का अभाव है।
5. किसी भी क्षेत्र की प्रगति उसकी जनता की शैक्षणिक सम्प्राप्ति पर निर्भर करती है। 1991 की जनगणना के अनुसार पुरूष साक्षरता दर 60.01 प्रतिशत तथा स्त्री साक्षरता दर 30.97 प्रतिशत थी। 2001 में पुरूष साक्षरता दर बढ़कर 78.22 प्रतिशत हो गई जबकि स्त्रियों की साक्षरता दर 54.49 प्रतिशत ही हो पाई। जो कि पुरूषों की तुलना में काफी कम है। यह एक चिंता का विषय है।
6.ग्रामीण एवं नगरीय साक्षरता की तुलना करें तो ग्रामीण क्षेत्र में साक्षरता का स्तर निम्न है। अधिकतर लड़कियाँ माध्यमिक स्तर तक की शिक्षा ही ग्रहण कर पाती है।
7. वैवाहिक स्थिति यदि हम देखे तो न्यादर्श अधिवासों के चयनित परिवारों के सर्वेक्षण से ज्ञात होता है, कि नगरीय क्षेत्र की तुलना में ग्रामीण क्षेत्र में अब भी 18 वर्ष से कम आयु में लड़कियों का विवाह कर दिया जाता है। जो कि चिंता का विषय है।
8. भोपाल होशंगाबाद संभाग के अन्तर्गत अवस्थित परिवारों में सामाजिक रीति–रिवाज के साथ–साथ अधिकांश बुजुर्ग या अशिक्षित लोग जातिगत रूढ़ियों से बधे है।
9. मुस्लिम समाज में अब भी पर्दा प्रथा अधिक पाई जाती है। जिसके चलते वह अपने घर की बच्चियों एवं महिलाओं को शिक्षा ग्रहण करने अथवा बाहर कमाई करने हेतु कम भेजते है। अतः इस समाज का भी विकास कम हो पा रहा है।
10. दहेज प्रथा गांव और शहर की प्रत्येक जाति में प्रचलित है।
11. प्राचीन काल से प्रचलित संयुक्त परिवार प्रथा मनुष्य के अत्याधिक व्यक्तिवादी दृष्टिकोण के कारण समाप्त होती जा रही है। तथा संयुक्त परिवार छोटे–छोटे एकल परिवारों में विभक्त होते जा रहे है।

समस्याओं को दूर करने हेतु सुझाव :–

किसी भी देश की जनशक्ति की सार्थकता वहां के उपलब्ध मानव संसाधन का उचिततम प्रयोग द्वारा होती है। सर्वमान्य तथ्य है, कि किसी भी क्षेत्र का विकास तभी सम्भव है। जब वहां का मानव संसाधन एक अच्छे सामाजिक परिवेश में रहा हो। विकासशील देशों में मानव संसाधन के लिए सार्थक एवं सघन विधियों से युक्त प्रयास किए जाने चाहिए। इस समस्या को दूर कने हेतु निम्नलिखित प्रयास किए जाने चाहिए।
1. अध्ययन क्षेत्र में सामाजिक परिवेश में बदलाव के लिए यह आवश्यक है, कि स्त्रियों की दशा में सुधार किया जाना चाहिए।
2. भ्रूण हत्या पर कड़ा से कड़ा प्रतिबंध लगाया जाना चाहिए और परिवारों की मानसिकता कि लड़के से वंश चलेगा को बदलने का भरसक प्रयास किया जाना चाहिए।
3. ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों की तरफ हो रहे पलायन को रोकने के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा, स्वास्थ एवं रोजगार की सुविधाओं का विकास किया जाना चाहिए जिससे कि शहरी क्षेत्रों में असामाजिक गतिविधियों पर रोक लग सकें।
4. शैक्षिक सुविधाओं का विकास किया जाना चाहिए विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में। प्रत्येक गांव में प्राईमरी एवं मिडिल स्कूल तथा 3 से 5 गांव के बीच हाई स्कूल एवं हायर सेकेण्डरी स्कूल होने चाहिए जिससे कि ग्रामीण क्षेत्रों के बालक एवं बालिकाएँ अपनी पढ़ाई बीच में न छोड़ें।
5. छात्राओं को विशेष सरकारी अतिरिक्त सुविधाऐं प्रदान की जानी चाहिए। जिससे उनके परिवार वाले छात्राओं की पढ़ाई आगे करवाने के लिए प्रेरित हो सके।
6. बाल विवाह रोकने हेतू जो कानून बना है। उसका अच्छे से निर्वाह हो इसके लिए कठोर कदम उठाए जाने चाहिए। क्योकि अब भी ग्रामीण क्षेत्र के लोग इस कार्य को सम्पन्न होने देते है।
7. व्यक्ति की व्यक्तिवादि सोच के कारण टूट रहे संयुक्त परिवारों को जोड़ने का प्रयास किया जाना चाहिए एवं इस महत्व को बताया जाना चाहिए कि एक संयुक्त परिवार से ही अच्छे समाज का निर्माण होता है, और बच्चे संस्कारी बनते है।
8. युवा वर्ग में दहेज न लेने और देने के प्रति जागरूकता उत्पन्न की जानी चाहिए।
9. रूढ़िवादी समाज में जाति प्रथा, धर्मांधता, समाज में फैले रीति–रिवाज और कुरूतियों को शिक्षित समुदाय द्वारा दूर करने का प्रयास करना चाहिए।

निष्कर्ष :–

प्रस्तुत शोध पत्र में अध्ययन क्षेत्र के सामाजिक अभिलक्षणों की क्या स्थिति है ? का अध्ययन किया गया है। सर्वेक्षण में आकंड़ों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है, कि अध्ययन क्षेत्र में स्त्री पुरूष साक्षरता में बहुत अंतर है जो स्त्रियों के साथ हो रहे भेदभाव को दर्शाता है।

यहां का अधिकतर मुस्लिम समुदाय पर्दाप्रथा का अनुयायी है। अध्ययन क्षेत्र की अधिकतर जनसंख्या दहेज प्रथा का प्रबल सर्मथन करती है।

अध्ययन क्षेत्र में उपर्युक्त सभी समस्याऐं व्याप्त है। जो मानव संसाधन विकास के मार्ग में एक भयंकर अवरोध के रूप में परिलक्षित होती है।

क्षेत्र में अंधविश्वास एवं कट्टर धर्मांधता अब भी व्याप्त है। जैसे बाल विवाह, दहेज प्रथा, परिवार में स्त्री की उपेक्षा, सामाजिक कुरूतियों का प्रचलन एवं अधिक संतानोतपत्ति आदि दशाऐं व्यापक रूप से विधमान है।

इस प्रकार यह अनुमान निसंदेह रूप से असत्य सिद्ध नहीं होगा कि यदि अध्ययन क्षेत्र में वर्तमान सामाजिक विसंगतियां यथावत बनी रही तो एक अच्छे सामाजिक परिवेश का निर्माण नहीं हो सकता। अतः आवश्यकता इस बात की है कि जनसाधारण में राष्ट्र, समाज, परिवार एवं व्यक्तिगत कल्याण के लिए आत्म चेतना को जागृत करने के अधिक से अधिक प्रयास किए जाने चाहिए।

Corresponding Author : email :

International Journal of Fundamental & Applied Research
Website : www.ijfar.org ,(ISSN- 2320-7973 Volume-5 Issue -10+11 Month – January+February 2018 pp. (04 – 06)

संदर्भ सूची :–

1. वात्सयायन (1982) : सामाजिक जननांकिकी एवं जनसंख्या समस्यायन,विवेक प्रकाशन, दिल्ली पेज नं. –10।
2. भारत की जनगणना (1991) : प्राथमिक जनगणना सार,जनगणना कार्यालय निर्देशालय, भाग–2 सीरीज–13।
3. भारत की जनगणना (2001) : प्राथमिक जनगणना सार,जनगणना कार्यालय निर्देशालय,भाग–2 सीरीज–14 ।
4. मध्यप्रदेश सरकार (2001) : मध्यप्रदेश का सांख्यिकी संक्षेप ।
5. सी.के. अग्रवाल (1988) : भारतीय सामाजिक व्यवस्था एवं सामाजिक पर्यावरण, आगरा बुक स्टोर, आगरा, भाग–1 पेज नं. –258 ।
6. जी.के. अग्रवाल (1988) : भारत में सामाजिक समस्यायें, आगरा बुक स्टोर, आगरा, पेज नं.–222 ।
7. के.एम.एल. अग्रवाल (1987) : भौतिक भूगोल, साहित्य भवन, आगरा।
8. डी.एस. अवस्थी, (1985) : आर्थिक विश्लेषण, साहित्य रत्नालय, कानपुर।
9. ए.अजीज (1993) : ''फर्टिलिटी एज ए फंक्शन ऑफ एजुकेशन एण्ड इकोनोमिक स्टेटस इन मुस्लीम वोमेन'' द जियोग्राफर, वोल, सीरीज – 60 नं. 1।
10. अहुजा श्रीराम (2000) : भारतीय समाजिक समस्याऐं, रावत पब्लिकेशन, जयपुर।
11. पी.जे. भट्टाचार्य, जी.एन. शास्त्री (1976) : भारत की जनसंख्या, विकास पब्लिकेशन, नई दिल्ली।

Corresponding Author : email :